फियोना की मधुमक्खी

लेखनः बैवरली कैलर

चित्रः डिएन पेटरसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

फियोना की मधुमक्खी

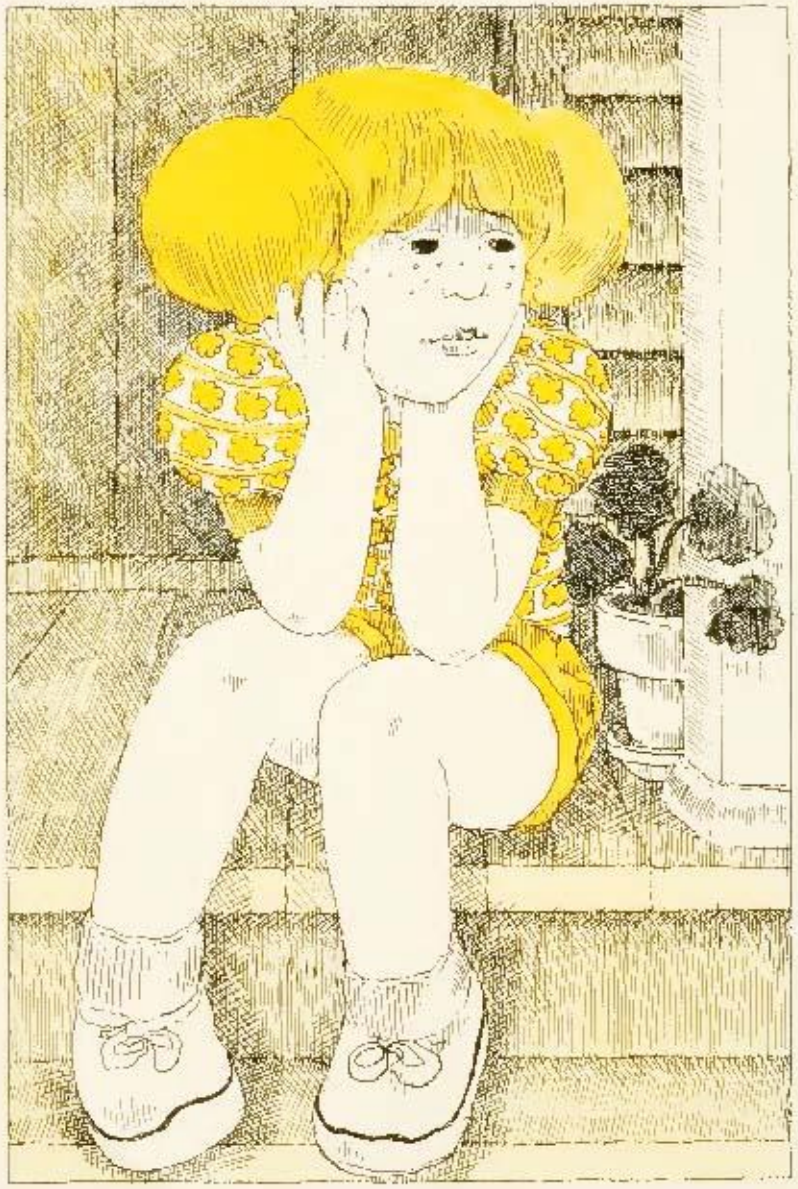

फियोना की मधुमक्खी

लेखनः बैवरली कैलर

चित्रः डिएन पेटरसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

डुलसे तथा वी के लिए

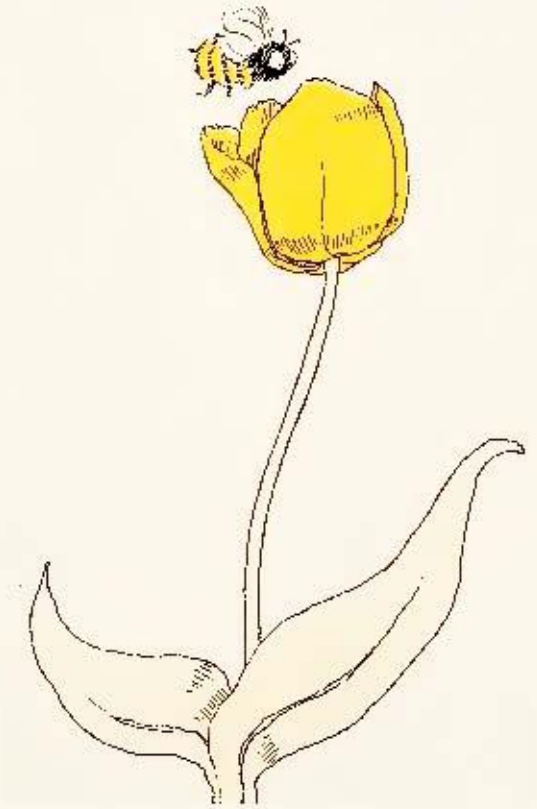

फियोना फॉस्टर बाहर बरामदे में गई ताकि अपने कुत्ते के कटोरे में पानी भर सके।

फियोना को कोई कुत्ता था नहीं, ना ही कोई दूसरा पालतू जानवर। पर उसने अपने जेबखर्च के पूरे पैसे कुत्ते का एक कटोरा ख़रीदने के लिए बचाए थे।

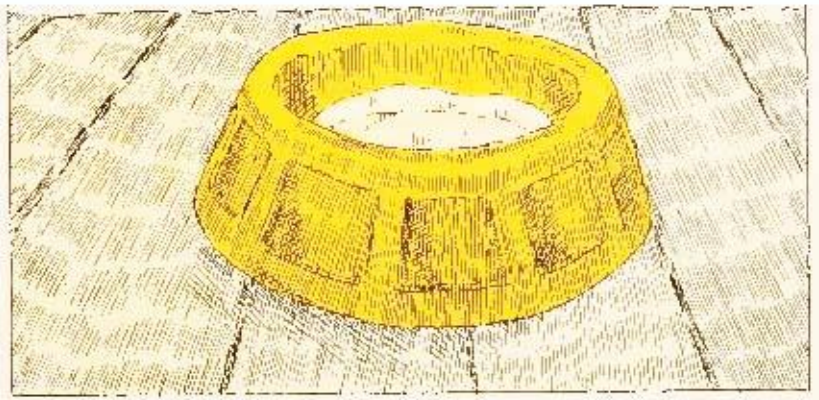

वह हर दिन उस कटोरे को अपने घर के सामने वाले बरामदे में रखती और तब उसमें पानी भरती।

इस उम्मीद से कि किसी दिन कोई कुत्ता पानी पीने आए और चंद मिनट रुके, और उसका दोस्त बन जाए।

इस उम्मीद से भी कि तब कुत्ते का मालिक भी आए, और एक-दो घंटे रुके, और उसका दोस्त बन जाए।

उसे कुत्ते के एक कटोरे को भरने से इस तरह दो दोस्त मिल सकेंगे।

असलियत यह थी कि फियोना का अब तक कोई दोस्त बन ही नहीं सका था।

"इसलिए, क्योंकि तुम बेहद शर्मीली हो," उसकी माँ उससे कहती, "तुम्हें बाहर जा कर लोगों से मिलना चाहिए।

"इसलिए क्योंकि तुम कोशिश ही नहीं करती," उसके पिता कहते। "तुम्हें बाहर जाना और लोगों का अभिवाादन करना चाहिए।"

“पर मैं किसीके आने का इन्तज़ार करना पसन्द करुँगी,” फियोना ने सोचा।

“मैं लोगों के साथ कैसा बरताव करुँ, यह जानती ही नहीं।”

उस दिन जब फियोना कुत्ते का कटोरा भरने गई उसे कोई कुत्ता नज़र ही नहीं आया।

पर कटोरे में एक मधुमक्खी थी।

वह कटोरे के पैंदे में गोल-गोल तैर रही थी।

फियोना को बहुत बुरा लगा।

वह जानती थी कि अगर कोई कुत्ता आकर पानी के साथ मधुमक्खी को भी पी जाए तो अच्छा न होगा।

वह कुत्ते के किसी ऐसे मालिक को नहीं जानती थी जो यह चाहे कि उसका कुत्ता पानी के साथ मधुमक्खी को भी पी ले।

नए दोस्त बनने के पहले ही, उसे उन दोस्तों को नाराज़ कर देने का ख़तरा नज़र आने लगा।

ज़ाहिर था कि मधुमक्खी मुसीबत में थी। उसका तैरना धीमा होता जा रहा था।

कुछ देर बाद तो उसने कोशिश करना ही बन्द कर दिया और शिथिल पड़ गई।

फियोना को हमेशा ही बेवकूफ जीवों पर दया आती थी (और चतुर जानवरों पर भी)।

पर वह यह भी जानती थी कि नाराज़ मधुमक्खी डंक मार सकती है।

उसने यह कहावत सुन रखी थी।

"गीली मुर्गी-सी पागल।"

पर उसे यह पक्की तौर पर नहीं मालूम था कि गीली मधुमक्खी किस हद तक पगला सकती है।

इधर यह साफ़ था कि मधुमक्खी डूब रही थी।

फियोना ने आस-पास देखा, उसे एक टहनी नज़र आई।

उसने टहनी कुत्ते के कटोरे में डाली, ताकि मधुमक्खी उस पर चढ़ जाए।

पर मधुमक्खी इतनी थक चुकी थी कि उसने कोई ध्यान नहीं दिया। वह बेजान हो पानी पर तिरती रही।

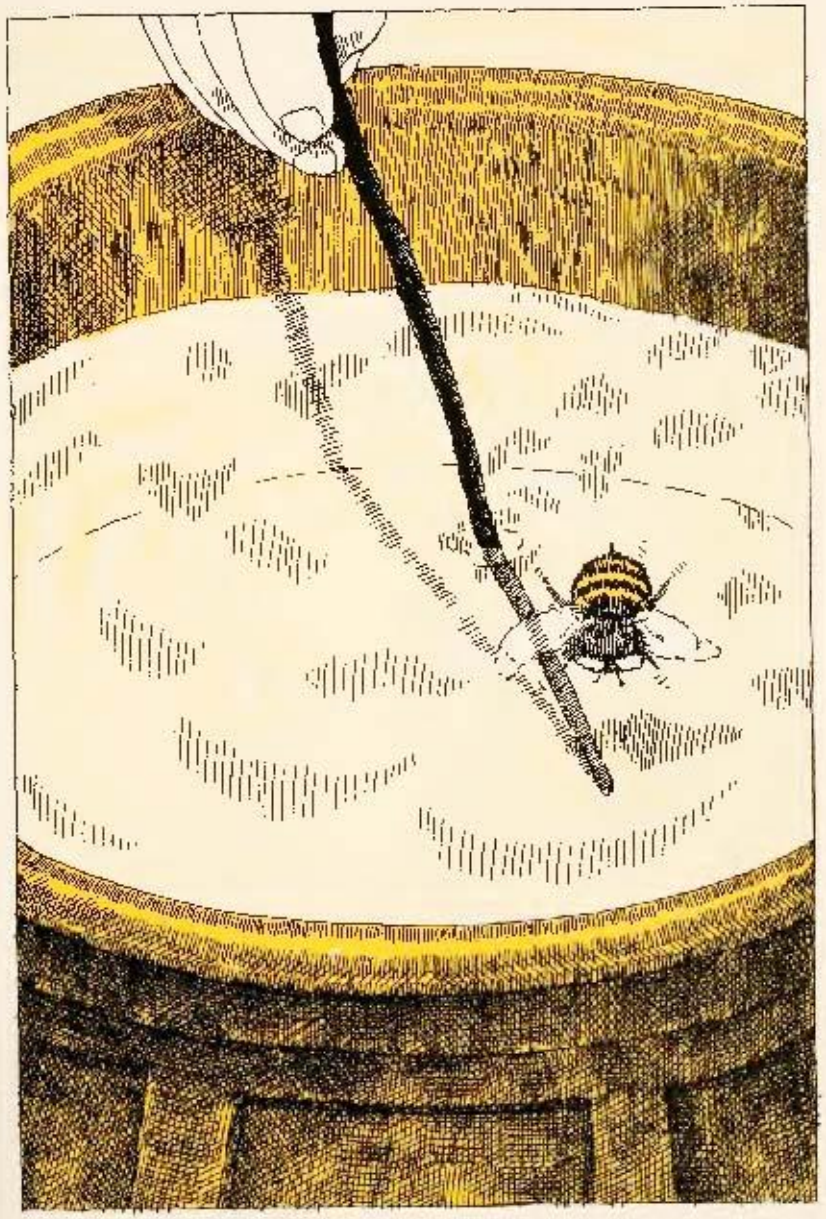

फियोना ने बड़ी सावधानी से टहनी मधुमक्खी के नीचे की।

तब टहनी को बेजान मधुमक्खी समेत कटोरे से बाहर निकाल लिया।

उसने सोचा था कि वह मधुमक्खी को किसी धूपदार जगह में रख, भाग लेगी। यह पता चलने के पहले ही कि गीली मधुमक्खी नाराज़गी से कितना पगला सकती है।

पर वह माकूल जगह तलाश पाती उसके पहले मधुमक्खी ने खुद को टहनी के ऊपर घसीटा और फियोना की उंगली पर चढ़ आई।

फियोना जड़ हो गई, बिलकुल हिली नहीं।

वह जानती थी कि मधुमक्खी पहने हुए किसी इन्सान को बिना हिले-डुले खड़े रहना चाहिए ताकि मधुमक्खी चिढ़ न जाए।

मधुमक्खी मिनट भर उसकी उंगली को थामे रही।

वह बहुत छोटी थी और बहुत गीली, और बेहद थकी हुई भी।

तब मधुमक्खी ने हिम्मत जुटा खुद को फियोना की हथेली के पीछे घसीटा।

अब तो फियोना ने अपनी साँस तब तक रोक ली, जब तक उसकी छाती में दर्द न होने लगा।

"मैं अपनी बाकी ज़िन्दगी हाथ पर मधुमक्खी के साथ तो नहीं बिता सकती," उसने समझदारी से खुद से कहा।

तब बहुत ही सावधानी से उसने अपनी हथेली बरामदे की रेलिंग पर एक धूपदार जगह टिका दी।

जब मधुमक्खी गर्म हो जाए और सूख जाए, उसने सोचा, वह ज़रूर उसका हाथ छोड़ कर कहीं और उड़ जाएगी। वहाँ चली जाएगी जहाँ वह जा रही थी।

जिस वक़्त फियोना रेलिंग पर अपना हाथ रखे खड़ी थी, मधुमक्खी ने अपनी ज़िन्दगी में फिर से रुचि लेना शुरू कर दिया।

उसने अपने पर हिलाए। अपने अगले पैरों से अपना मुँह पोंछा, जैसे बिल्ली खुद को साफ़ करती है।

तब उसने अपने पिछले पैरों से अपनी बगलें पोंछी, बड़ी तेज़ी से।

रेलिंग फियोना के चेहरे के पास थी। और फियोना का चेहरा मधुमक्खी के पास था।

मधुमक्खी गोल-मटोल थी, काल-पीली धारियों वाली।

जब वह कुछ सूखी, फियोना ने ग़ौर किया कि वह रोएंदार है। बिल्ली के नए बच्चे जैसी।

उसने इसके पहले किसी मधुमक्खी का चेहरा यों क़रीब से देखा न था।

मधुमक्खी के चेहरे तो अच्छे होते हैं, उसने तय किया।

फिर भी उसे तब और खुशी होती अगर वह चेहरा उसके हाथ पर न टिका होता।

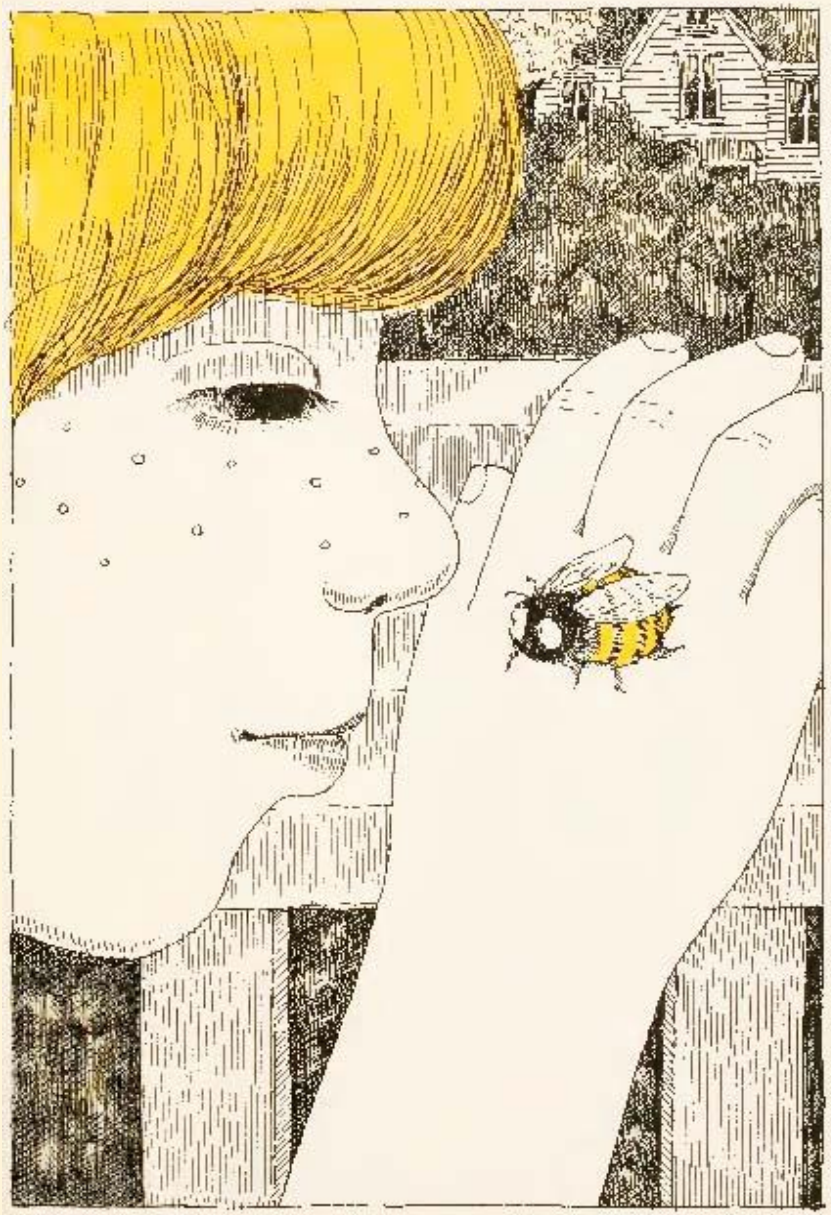

अरे ओ मधुमक्खी, उसने मन ही मन सोचा, मेरी बाँह सो चली है।

मधुमक्खी उसकी कलाई की ओर बढ़ी। उसने अपने पंख हिलाए, और मुँह पोंछा। तब कुछ सुस्ताई।

"ओ हो," फियोना बोली।

उसे अपने हाथ पर एक गीली मधुमक्खी रेंगती अच्छी नहीं लगी। वह डर रही थी कि अगर उसने कुछ किया तो गीली मधुमक्खी नाराज़ न हो जाए।

मदद के लिए किसी को पुकारने तक से भी उसे डर लगा रहा था।

अगर कोई मधुमक्खी को उकसा दे तो कहीं वह इतनी नाराज़ न हो जाए कि जो पास हो उसे ही डंक मार दे।

सो फियोना अपना हाथ बरामदे की रेलिंग पर रखे खड़ी रही। मधुमक्खी को देखती रही।

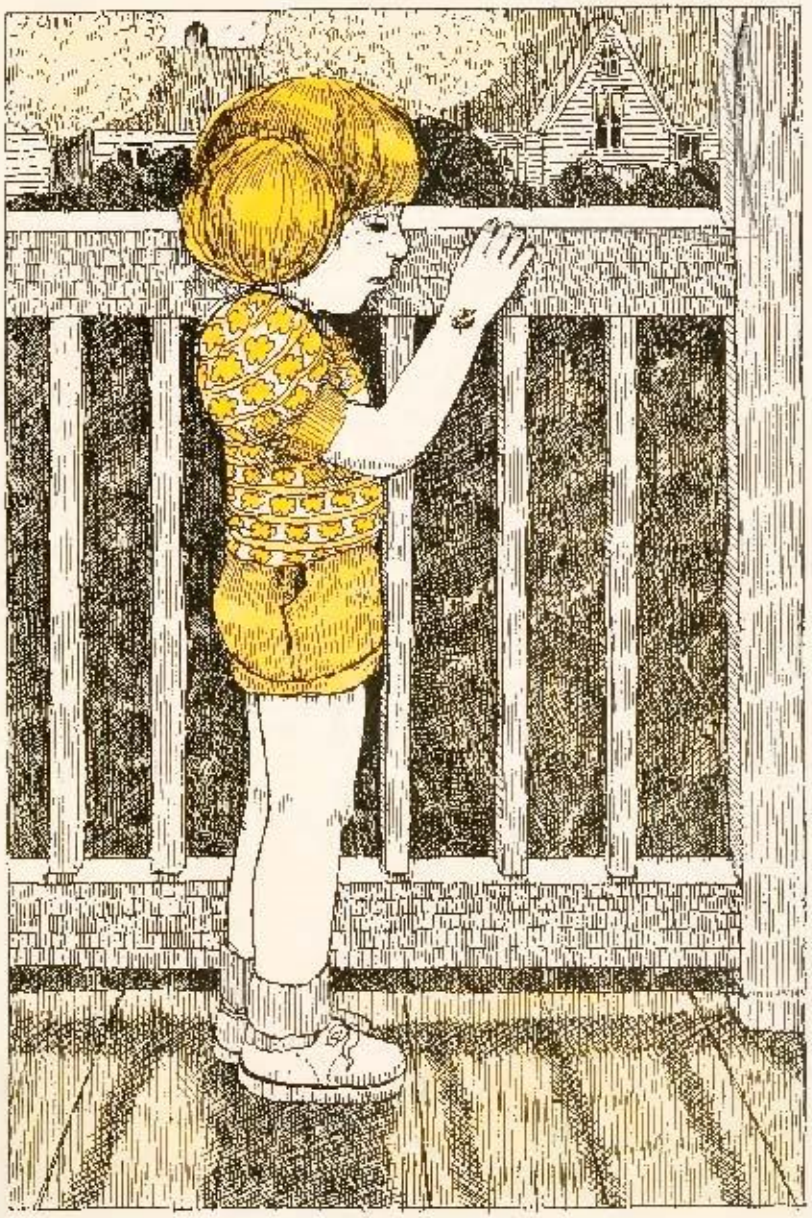

कुछ समय बाद उसे लगा कि मधुमक्खी शायद बेहतर महसूस कर रही है।

वह उसकी बाज़ू पर रेंगती हुई उसके कंधे तक चढ़ आई। तब वहाँ आराम करने बैठ गई। मानो चढ़ाई ने उसे फिर से थका दिया हो।

अगर फियोना अपनी दाहिनी आँख के कोने से नीचे को देखती, उसे मधुमक्खी नज़र आ रही थी।

वह उसके कंधे पर टिकी शान्त लग रही थी।

“अगर मैं और देर तक बिना हिले-डुले खड़ी रही तो मैं बेहोश हो नीचे गिर जाऊँगी। और गिरी तो मधुमक्खी सचमें नाराज़ हो जाएगी।”

जल्द ही फियोना को एक ख़याल आया।

उसे लगा कि ख़याल बड़ा ही उम्दा है।

उसने तय किया कि वह बरामदे से नीचे उतरेगी, इतनी सावधानी से कि मधुमक्खी को न हिलाए।

और तब वह आहिस्ता-आहिस्ता, बड़ी सिफ़त से पार्क की ओर बढ़ेगी।

वहाँ एक धूपदार जगह तलाशेगी, जो फूलों से भरी हो।

इतनी देर तक तैरने और खुद को सुखाने के बाद मधुमक्खी ज़रूर भूखी होगी। इसलिए जब उसे फूल दिखेंगे वह उनके मधु का नाश्ता करने उड़ जाएगी।

सो फियोना एहतियात बरतते हुए बरामदे की पहली सीढ़ी उतरी।

शान्त रहना मधुमक्खी, उसने सोचा। यह तुम्हारे भले के लिए है।

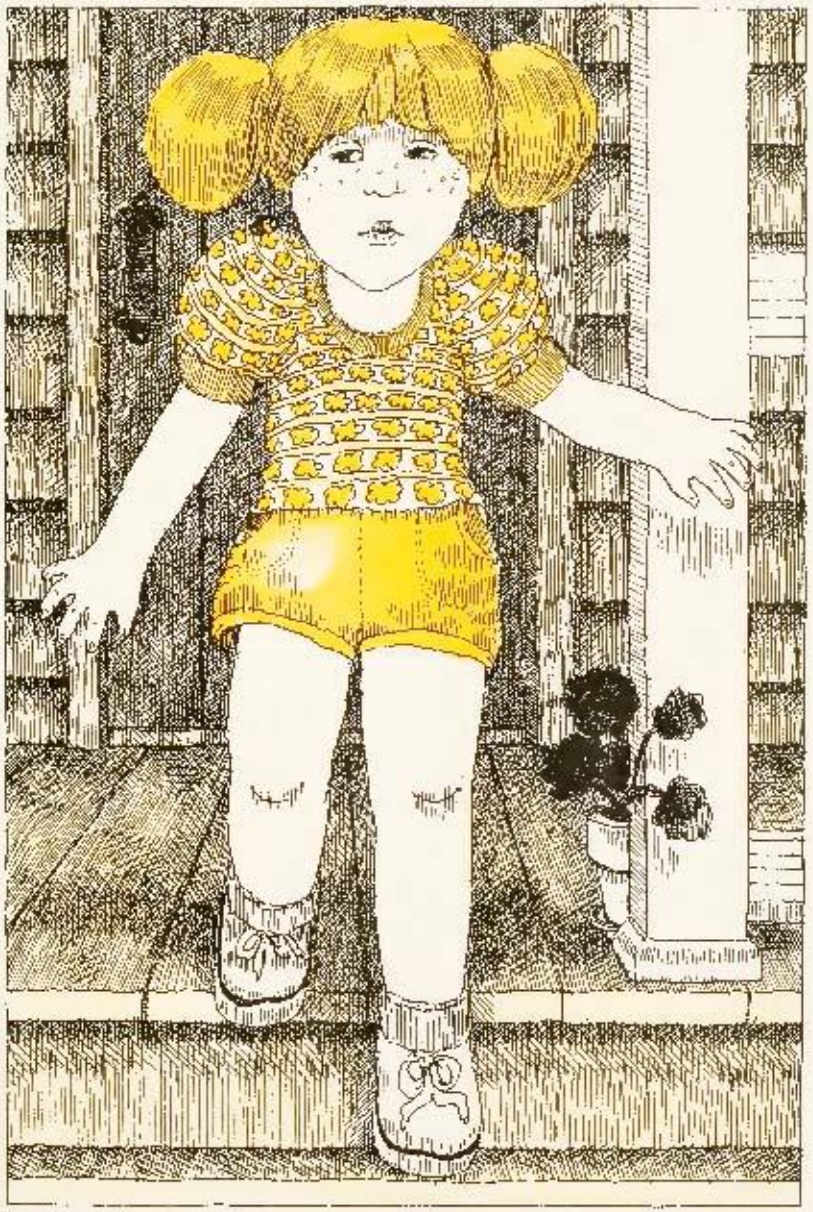

उसे फुटपाथ तक पहुँचने में काफ़ी समय लगा।

वह इस तरह चल रही थी मानो अपने सिर पर अण्डे रख चल रही हो।

तब वह धीमी गति से पार्क की तरफ बढ़ी, उसने तिरछी आँखों से नीचे दाहिने कंधे की ओर देखा। मधुमक्खी अब भी उसके कंधे पर अपनी जगह पर बाकायदा बनी हुई थी।

अगले पन्द्रह मिनट में फियोना तीन ब्लॉक पार कर गई।

फियोना की ही कद-काठी की एक लड़की सड़क पार कर रही थी। वह एक बच्चा-गाड़ी धकेल रही थी जिसमें एक नन्हा था।

लड़की ने फियोना को देखा, तब बोली, "अरे सावधान! हिलना मत, तुम्हारे कंधे पर एक मधुमक्खी है।"

"मुझे पता है," फियोना ने कहा।

यह सुन लड़की आँखें कुत्ते के कटोरे-सी गोल हो गईं।

“तुम्हें पता है?”

“हाँ, मैंने इसे डूबने से बचाया है।”

“अरे वाह!” लड़की ने मधुमक्खी को बड़े ध्यान से देखा। “क्या वह मुझे डंक मारेगी?”

“मुझे पता नहीं। पर उसने अब तक मुझे तो डंक नहीं मारी,” फियोना ने जवाब दिया।

“हो सकता है कि वह तुम्हें पसन्द करती हो।”

सामने नुक्कड़ किनारे एक लड़का साइकिल लिए खड़ा था। लड़की ने उससे कहा, “देखो तो ज़रा, यह मधुमक्खी उसके कंधे की सवारी कर रही है, क्योंकि इसने उसे डूबने से बचाया था।

“क्या खूब!” लड़के ने मधुमक्खी को घूर कर देखा, तब फियोना को।

“क्या वह डंक नहीं मारती?”

फियोना जवाब में अपने कंधे उचकाने ही वाली थी कि उसे कंधे पर सवार मधुमक्खी की याद आ गई। “मुझे लगता है कि वह मुझे पसन्द करती है।”

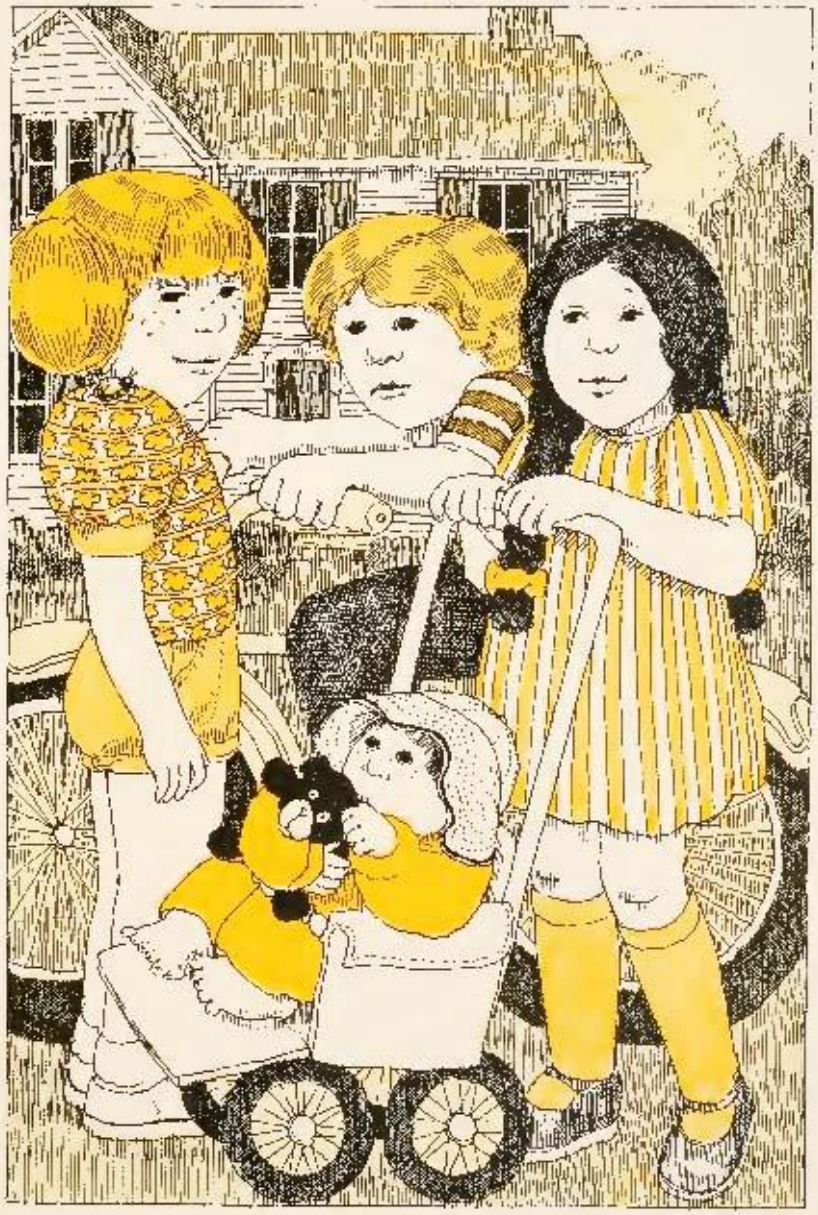

''तुम्हारा नाम क्या है?'' लड़की ने पूछा।

''फियोना।''

''मेरा बारबरा है।'' तब लड़के की ओर इशारा कर बारबरा ने कहा, ''यह लैरी है।'' तब बच्चा-गाड़ी की ओर इशारा कर बोली, ''यह ऑलिवर है। मेरा छोटा भाई। यह जी का जंजाल है!''

''मैं ऐसे किसीको नहीं जानता जिसकी पालतू मधुमक्खी हो,'' लैरी ने अचरज से कहा। ''तुम जा कहाँ रही हो?''

बारबरा फियोना की बगल में बच्चा-गाड़ी धकेलती चलने लगी।

''मैं मधुमक्खी को पार्क में ले जा रही हूँ,'' फियोना ने जवाब दिया। लैरी अपनी साइकिल धकियाते फियोना की दूसरी ओर चलने लगा था।

''क्या तुम्हें मधुमक्खियों से डर नहीं लगता?''

''अगर तुम्हें पता हो कि उनके साथ कैसा सुलूक किया जाए, तो वे ठीक ही रहती हैं।''

''ज़रा संभल कर!'' पीछे से एक आवाज़ ने कहा।

“तुम्हारे कंधे पर मधुमक्खी है,” दूसरी आवाज़ ने कहा।

बारबरा मुड़ी। “यह उसकी पालतू मधुमक्खी है। यह उसके कंधे पर सवारी करती है।”

“बहुत खूब!”

दो लड़कियाँ फियोना के सामने आ खड़ी हुईं।

फियोना को यह पता नहीं था कि किसने “ज़रा संभल कर!” कहा था और किसने “बहुत खूब!” पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।

दोनों ने मधुमक्खी को पास से घूर कर देखा और फियोना से पूछा कि वह डंक तो नहीं मारेगी।

“इसने मधुमक्खी को डूबने से बचाया है,” बारबरा ने जवाब में कहा। “सो वह इसे पसन्द करती है।”

जब लड़कियों ने फियोना से यह जान लिया कि फियोना ने मधुमक्खी को कैसे बचाया था, उन्होंने कहा कि उनके नाम, पॉलीन और मार्था हैं।

जब वे साब पार्क में पहुँचे, उन्हें लैरी के दो दोस्त मिले।

“यहाँ आओ,” लैरी ने अपने दोस्तों से कहा। “देखो तो, इस लड़की की एक पालतू मधुमक्खी है, जो उसके कंधे की सवारी करती है।”

“अरे वाह!” लैरी के दोस्तों न कहा और तब जानना चाहा कि वह डंक मारती है या नहीं।

बरबरा, पॉलीन और मार्था ने उन्हें बताया कि मधुमक्खी उसे डंक मारेगी जो फियोना को परेशान करेगा।

लैरी के दोस्तों का नाम बिल और हार्वर्ड था। हार्वर्ड का कुत्ता उसके साथ था। कुत्ते के अगले पैर छोटे और पिछले लम्बे थे। उसके बाल उसकी आँखों पर आ रहे थे और उसके बालों में खरपतार थी। हार्वर्ड उसे स्पाइक नाम से बुलाता था।

“मुझे अपनी मधुमक्खी के लिए एक धूपदार जगह तलाशनी है, जहाँ फूल भी हों,” फियोना ने एलान किया।

सबने ठीक ऐसी जगह ढूंढ़ने में फियोना की मदद की।

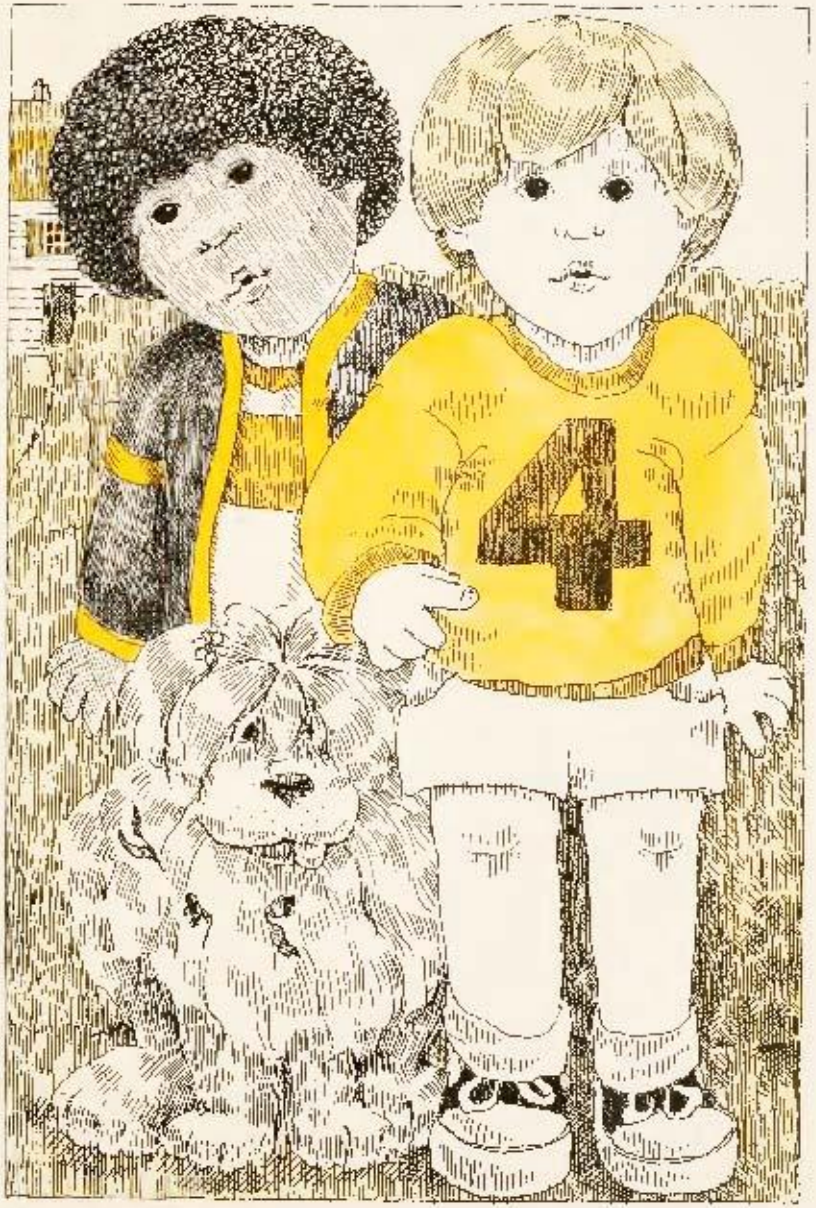

आखिरकार स्पाइक को एक टीला मिला जो तिपतिया घास से ढ़का था। टीले के पास ही फूलों की एक क्यारी थी जिसमें ट्यूलिप लहलहा रहे थे।

"मुझे बड़ी सावधानी से बैठना होगा, ताकि मधुमक्खी परेशान न हो," फियोना ने कहा।

सबने एक-दूसरे को चेताया कि उन्हें मधुमक्खी को कतई परेशान नहीं करना है। हार्वर्ड ने स्पाइक को थाम लिया। बरबरा ने ऑलिवर को बच्चा-गाड़ी से निकाला।

"जैसे ही मधुमक्खी को याद आएगा कि वह भूखी है, वह उड़ कर फूलों पर जा बैठेगी," फियोना ने कहा। "जब वह हिलने लगे तो सब शान्त रहना, उसे मत उकसाना।"

सबने हाँ में सिर हिलाया।

पर स्पाइक कुनमुनाया।

"क्या वह पेट भरने के बाद तुम्हारे कंधे पर वापस लौटेगी?" बारबरा ने पूछा।

"मैं इन्तज़ार नहीं करूँगी," फियोना ने कहा। "जैसे ही वह मधु पीना शुरू करेगी मैं चली जाऊँगी।"

यह सुन सबको अचरज हुआ, ऑलिवर तक को।

"कुत्तों और बिल्लियों को इन्सानों की ज़रूरत होती है," फियोना ने कहा। "पालतू जानवरों को इन्सानों की ज़रूरत होती है, पर मधुमक्खियों को नहीं। उन्हें आज़ाद होना चाहिए। मधुमक्खी मुझसे बहुत हिल-मिल जाए उसके पहले ही मैं चली जाऊँगी।"

बिल और हार्वर्ड ने कहा, "बहुत खूब।" पॉलीन और मार्था ने सिर हिला सहमति जताई।

सब यह राह तकने लगे कि मधुमक्खी को भूख लगे।

बारबरा ने फियोना से पूछा कि वह कहाँ रहती है।

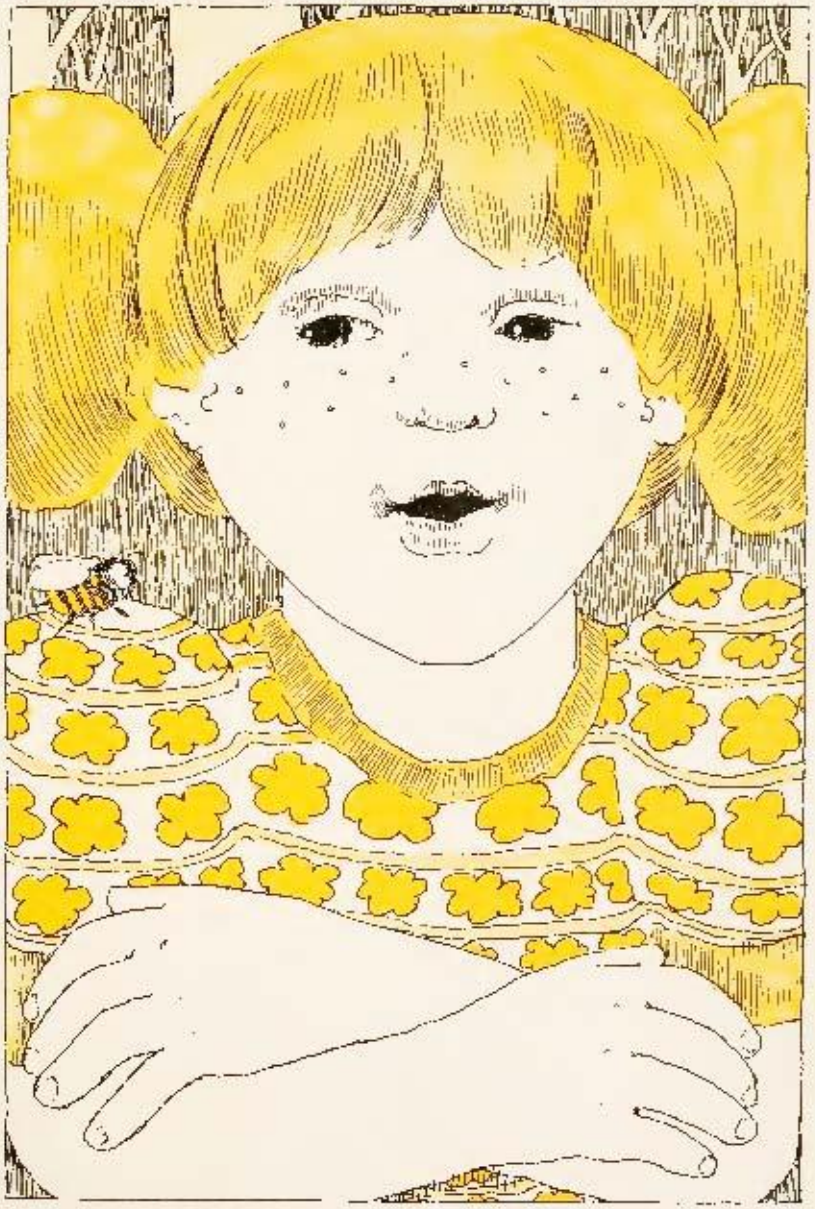

पॉलीन ने फियोना को अपने घर पिंग-पाँग खेलने बुलाया। मार्था ने फियोना को शनिवार को फिल्म देखेने चलने का आमंत्रण दिया। लैरी ने कहा कि फियोना उसकी साइकिल चला सकती है। ऑलिवर ने उसके पैरों पर अपनी लार टपकाई।

बिल ने कहा कि वह फियोना को कुछ देर अपना पालतू चूहा पकड़ने देगा। हार्वर्ड ने उसे अपनी बची हुई चॉकलेट दी। स्परइक ने फियोना से दो बार हाथ मिलाया।

तब मधुमक्खी ने अपने पंख हिलाए।

फियोना के सिवा सब कुछ कदम पीछे हट गए।

बारबरा ने ऑलिवर को गोद में उठा लिया। हार्वर्ड ने स्पाइक को चेतावनी दी।

मधुमक्खी ने अब अपने पंख और तेज़ी से फड़फड़ाए।

फियोना के सिवा बाकी सब और पीछे हटे।

तब मधुमक्खी उड़ी - फुर्रर्रर्र - तिपतिया घास के ठीक ऊपर से।

फियोना उठ खड़ी हुई।

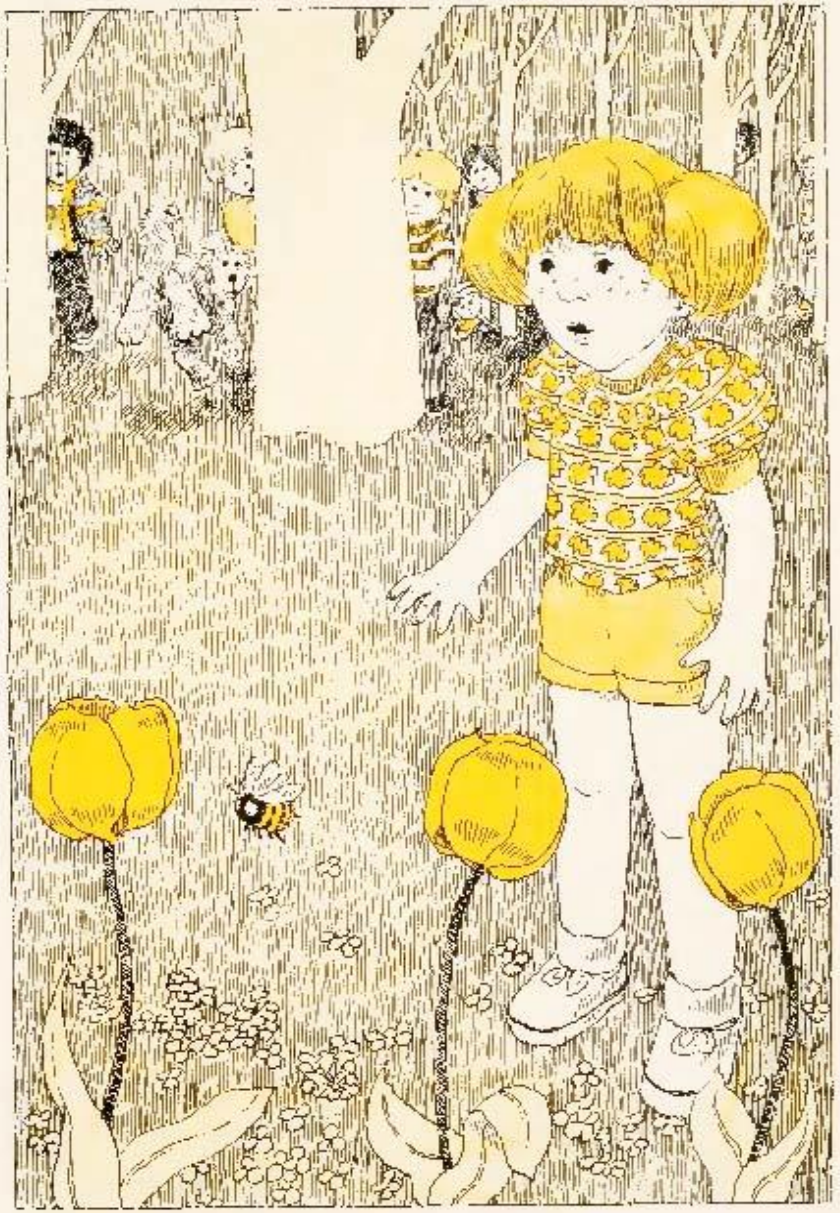

सबने मधुमक्खी को अलविदा कहा।

तब वे सब फियोना के साथ उसके घर तक चले।

सब उसके बारामदे में बैठे और उन्होंने मधुमक्खियों और शेरों को साधने-सिखाने के बारे में बात की।

स्पाइक और ऑलिवर ने कुत्ते के कटोरे से पानी पिया।

तब स्पाइक ने फियोना के कान को चाट उसे चुम्मी दी। ऑलिवर उसके पैरों पर अपनी ठोड़ी टिका कर लेट गया।

जब जाने का समय आया, सबने फियोना से कहा, "तो कल मिलते हैं, ठीक है ना?"

स्पाइक ने एक आख़िरी बार उससे हाथ मिलाया।

ऑलिवर ने उसके पैरों से चिपटे रहने की कोशिश की।

"क्या तुम्हारा दिन अच्छा गुज़रा?" माँ ने रात के खाने के समय फियोना से पूछा।

फियोना ने हाँ में सिर हिलाया।

"मैंने एक मधुमक्खी की जान बचाई और मशहूर हो गई। मुझे पता नहीं कि मैं कल भी मशहूर रहूँगी या नहीं। पर यह पता है कि अब मेरे ढ़ेरों दोस्त हैं।"

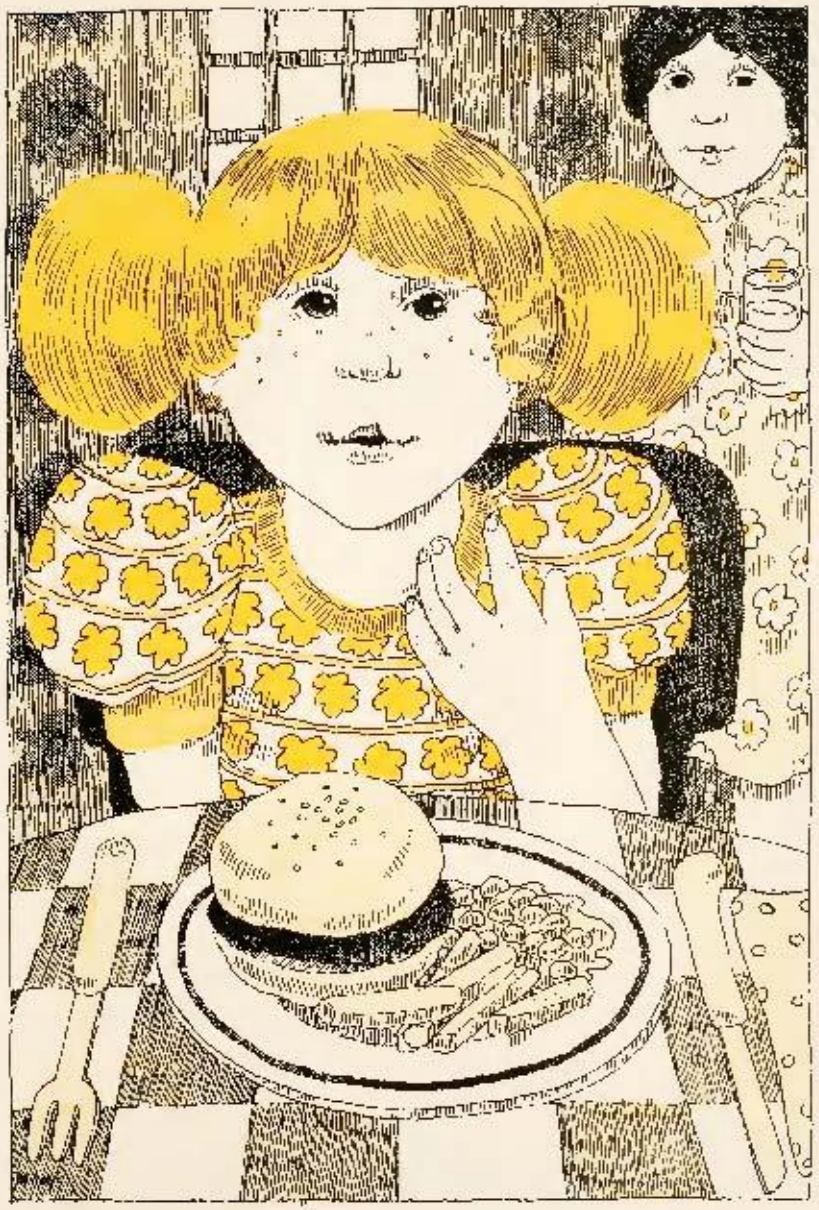

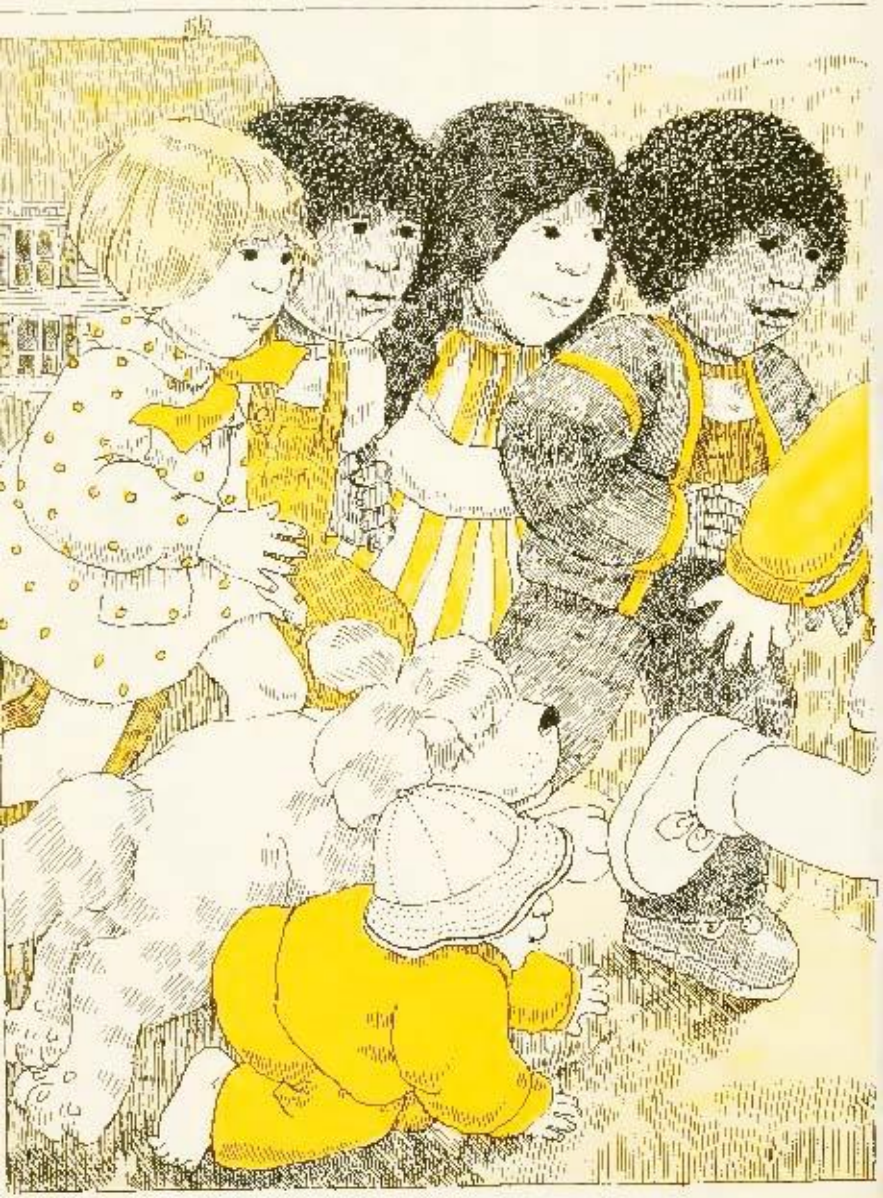

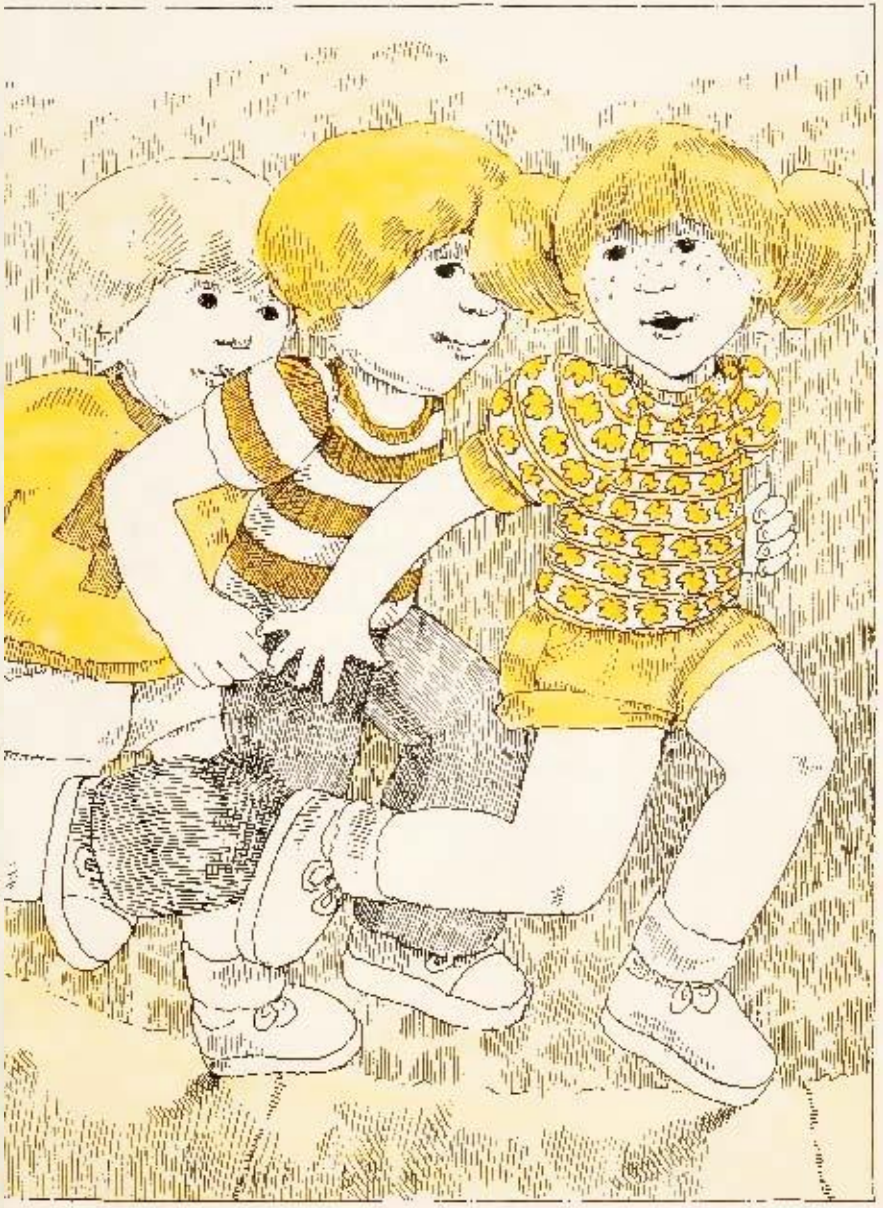

लेखिका के बारे में

बैवरली कैलर अपने पति और तीन बड़े झबरीले कुत्तों के साथ कैलिफोर्निया में रहती हैं। यह उनकी पहली बाल पुस्तक है, हालांकि वे वयस्कों के लिए *द बगदाद डिफैक्शन्स्* नामक एक उपन्यास और कई लघुकथाएं लिख चुकी हैं। साथ ही मध्यपूर्व और युरोप में रहते समय उन्होंने अमरीकी समाचार पत्रों के लिए कई स्तंभ भी लिखे हैं।

चित्रकार के बारे में

डाएन पेटरसन अपने पति व दो बेटियों के साथ कैनैटिकट में रहती हैं। वे *द बिगेस्ट स्नोस्टॉर्म एवर* और *ईट!* का लेखन व चित्रण कर चुकी हैं, तथा *कॉनी हेटस् लिडिया* और *किटन्स् फार नथिंग* के लिए चित्र बना चुकी हैं।

फियोना की मधुमक्खी

लेखनः बैवरली कैलर

चित्रः डिएन पेटरसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

फियोना के कोई दोस्त नहीं थे। पर उसके पास एक कुत्ते का कटोरा था, जिसे वह हर दिन पानी से भरती थी। फियोना की उम्मीद यह थी कि किसी दिन कोई कुत्ता (और उसके साथ उसका मालिक) पानी पीने रुकेगा और कुछ देर वहीं ठहरेगा।

पर कुत्ते के बदले फियोना को एक मधुमक्खी मिली। वह कुत्ते के कटोरे में डूब रही थी। फियोना यह नहीं जानती थी कि कोई गीली मधुमक्खी गुस्से से कितनी पगलाएगी, पर उसने फिर भी मधुमक्खी को डूबने से बचाया। थकान से पस्त मधुमक्खी किसी तरह खुद को घसीट फियोना के कंधे तक पहुँची, और तब वहीं बैठी रही।

फियोना ने तय किया कि वह मधुमक्खी को पार्क तक ले जाएगी ताकि वह फूलों के मधु का नाश्ता कर सके। पार्क के रास्ते में फियोना मशहूर होने लगी।